स्पर्श-मोक्ष-सम्मीलनकालसाधनप्रकार:—

तिथिविरतिरयं ग्रहस्य मध्य:
स च रहित: सहितो निजस्थितिभ्याम् ।
ग्रहणमुखविरामयोस्तु कालौ-
विति पिहिताऽपिहिते स्वमर्दकाभ्याम् ॥

अन्वय:– तिथिविरति: अयं ग्रहस्य मध्य:, स च निजस्थितिभ्याम् रहित: सहित: ग्रहमुखविरामयो: तु कालौ, इति स्वमर्दकाभ्यां पहिताऽपिहिते ।

टीका– तिथिविरति: पूर्वसाधितो गणितागततिथि-समाप्तिकाल:, अयं कालविशेष:, ग्रहस्य ग्रहणस्य, मध्य: मध्यकाल: भवति । स च ग्रहमध्यकाल: निजस्थितिभ्यां स्वकीयस्पर्शमोक्षस्थितिभ्याम्, एकत्र: रहित: हीन:, अपरत्र सहित: संयुक्त:, क्रमेण ग्रहमुखविरामयो: स्पर्शमोक्षयो: कालौ समयौ, स्त: । इति एवं प्रकारेण, स्वमर्दकाभ्यां रहित: सहित: च क्रमेण पिहिताऽपिहिते सम्मीलनोन्मीलनकालौ भवत: ।

भावार्थ:– पूर्णिमातिथि की अन्तिम घड़ियाँ ग्रहण का मध्यमकाल होती है । मध्यमकाल की इन घड़ियों को दो स्थान पर लिखें । एक स्थान पर स्पर्शस्थिति काल को घटा दें । जो शेष रहे वह स्पर्शकाल होता है । दूसरे स्थान पर लिखे हुए मध्यकाल में मोक्षस्थिति को जोड़ दें । जो योगफल हो वह मोक्षकाल होता है और मोक्षकाल में से स्पर्शकाल को घटा दें तो पर्वकाल होता है ।

तदनन्तर तिथ्यन्तरुप ग्रहण के मध्यकाल में से स्पर्शमर्द घटायें । जो शेष रहे उसको संमीलनकाल कहते हैं । मध्यकाल में मोक्षमर्द को जोड़ने पर जो योगफल मिलता है उसको उन्मीलनकाल कहते हैं । उन्मीलनकाल में से सम्मीलनकाल को घटा देने पर जो शेष रहे उसको खग्रास पर्वकाल कहते हैं ।

ग्रहलाघवम्

चन्द्रग्रहणाधिकारः शास्त्री-III

Date 03-11-20
Page 1

ग्रहणमध्यस्थितिं खग्रासमर्दं च —

मानैक्यखण्डमिषुणा सहितं दशघ्नं
घ्नाहतं पक्षमतः स्वरसांशहीनम्।
ग्लौर्बिम्बहृत्स्थितिरियं घटिकादिका
स्यान्मर्दे तथा तनुदलान्तरखग्रहाभ्याम्॥

अन्वयः — इषुणा सहितं मानैक्यखण्डं दशघ्नं घ्नाहतं, अतः पदं स्वरसांशहीनं ग्लौर्बिम्बहृत्, इयं घटिकादिका स्थितिः स्यात्, तथा तनुदलान्तरखग्रहाभ्यां मर्दं।

टीका — इषुणा शरेण, सहितं युक्तं, मानैक्यखण्डं दाघच्छादकयोर्बिम्बयोगदलं, दशघ्नं दशसङ्ख्यया गुणितं तदनु घ्नाहतं ग्रासेन गुणितं, कर्तव्यम्। अतः पदं मूलं, स्वरसांशहीनं स्वकीयषष्ठांशोनं, ग्लौर्बिम्बहृत् चन्द्रबिम्बभक्तं करणीयम्। इयं घटिकादिका स्थितिः स्यात्, तथा तनुदलान्तरखग्रहाभ्यां बिम्बान्तरार्धखच्छन्नाभ्यां मर्दं स्यात्।

मर्द परिभाषा — स्पर्शकाल और मध्यग्रहण काल की घटिकादि की अन्तरस्थिति तथा सम्मीलन, मध्यग्रहण काल की घटिकादि की अन्तरस्थिति को मर्द कहते हैं।

भाषार्थः — मानैक्यखण्ड में शर जोड़े, जो योगफल हो उसको १० से गुणा करें। फिर उक्त गुणनफल को ग्रास से गुणा करें। इस गुणनफल का वर्गमूल निकालकर उसको पद से गुणा करें। उसमें ६ का भाग देकर प्राप्त लब्धि में चन्द्र-बिम्ब संख्या का भाग देने पर लब्धि घटिकादि मध्यस्थिति होती है।

दाह्य तथा दादक बिम्बों का अन्तर का अर्द्ध और ग्रास ग्रहण करके पूर्वोक्त रीति से साधित मध्यस्थिति को ही मर्द या मर्दस्थिति कहते हैं।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महावि०सुखसेना,
पूर्णियाँ।

स्पर्शमर्द-मोक्षमर्दयो: साधनप्रकार:—

युग्माहतैर्व्यगभुजांशसमैः पलैः सा
द्विष्ठा स्थितिर्विरहिता सहितार्कषड्भात्।
ऊने व्यगावितरथाभ्यधिके स्थितौ स्तः
स्पर्शान्तिमे क्रमगते च तथैव मर्दे।

अन्वयः — सा द्विष्ठा स्थितिः व्यगौ अर्कषड्भात् ऊने, युग्माहतैः व्यगभुजांशसमैः पलैः विरहिता सहिता च, अभ्यधिके, इतरथा विरहिता सहिता क्रमगते स्पर्शान्तिमे स्थिती स्तः, तथा एव मर्दे च।

तारा — सा पूर्वोक्ता, द्विष्ठा स्थानद्वये स्थिता, स्थितिः घटिकादिकास्थितिः, व्यगौ विराह्वर्के, अर्क-षड्भात् द्वादशराशितः षड्राशितः वा, ऊने हीने, सति, युग्माहतैः द्विगुणितैः, व्यगभुजांशसमैः विराह्वर्कभुजांश-समानैः, पलैः, विरहिता सहिता च एकस्मिन् स्थाने हीना अपरत्र संयुता कार्या, अभ्यधिके व्यगौ विषमपदे, सति, इतरथा विरहिता-सहिता च युक्ता हीना च स्थितिः कार्या, तदा क्रमगते ते द्वे, स्पर्शान्तिमे स्पर्शमोक्षकालिके स्थिती स्तः भवतः। तथैव पूर्वोक्तप्रकारेण, मर्दे मर्दस्थिती अपि साध्ये भवतः

भावार्थः — व्यगर्क के भुजांशों को 2 से गुणा करें। जो गुणनफल हो, उसको पलात्मक मानकर मध्यस्थिति में परिस्थिति के अनुसार जोड़ें अथवा घटायें। यदि व्यगर्क 5 राशि 16 अंश 6 राशि तक हो अथवा 11 राशि 16 अंश से 12 राशि तक का हो, तो जोड़ देने से मोक्षस्थिति होती है और घटा देने से जो शेष रहे वह स्पर्शस्थिति होती है। यदि व्यगर्क 6 राशि से 6 राशि 14 अंश तक हो अथवा 0 राशि से 10 राशि 14 अंश तक हो, तो मध्यस्थिति में जोड़ देने से स्पर्श-स्थिति तथा घटा देने से जो शेष रहे वह मोक्षस्थिति होती है। मर्दस्थिति के पलात्मक गुणनफल को पूर्ववत् जोड़ देने से स्पर्श-मर्द और घटा देने से मोक्षमर्द होता है।

इष्टकालिकग्रासानयनप्रकार: —

पिहितहतेष्टं स्थितिविहृतं तत्।
स्पर्शणभुक्सुगुणतसनमभीष्टम् ॥

अन्वय: — पहितहतेष्टं, स्थितिविहृतं तत् अभीष्टं स्पर्शणभुक्कगतसनं।

तारा — पिहितहतेष्टं मध्यग्रहणकालिकग्रासेन गुणितेष्टं, स्थितिविहृतं स्पर्शमोक्षस्थित्या भक्तं, यत् फलं तत्, अभीष्टं स्वाभिमतं, स्पर्शणभुक् सपादैकेन संयुतम, अङ्गुलादिकं, ग्रसनं ग्रास:, भवति।

भावार्थ: — ग्रास को इष्ट घड़ियों से गुणा करके जो गुणनफल प्राप्त हो उसमें यदि इष्ट घड़ियाँ स्पर्शकालिक हों तो, स्पर्शस्थिति का और मोक्षकालिक हों तो मोक्षस्थिति का भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो उसको अंगुलादि समझें, उसमें १ अंगुल १५ प्रत्यंगुल जोड़ देने पर इष्टकालिक ग्रास सिद्ध होता है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राध्यापक (ज्योतिष)
रा०उ०सं० महावि० सुरवसेना,
पूर्णियाँ।